परमेश्वरक बचन

भूमिका

पवित्र-शास्त्र (“बाइबिल”) नॉन-नॉन किताबों कैं मिलैबेर एक ठुल संग्रह छु, यैमिं नॉन-ठुल मिलैबेर कुल छियासठ किताब छन। क्वे मिं यौ धरति बणणक बारि मिं, क्वे मिं इतिहास, क्वे मिं गीत, क्वे मिं भविष्यबाणी और नीम छन। यौं सब बात आज बे हजारों साल पैली मध्य-पूर्व मिं घटित हईं, लेकिन आज लै भौतै खाश छन।

यौ बातों कैं उ बखतक भाषाओं मिं लिखी गो, जस यूनानी, इब्रानी और अरामिक। यैक लिजी कि यौं सब बात इतुक खाश छन, उनर अनुवाद भौत भाषाओं मिं लै करी गो।

यौ कुमाउंनी अनुवाद जो ऐल तुमर सामण छु, उ पुर पवित्र-शास्त्रक न्हैं, पर वीक थ्वाड़ खाश-खाश हिस्सोंक छु, जो साफ और सरल भाषा मिं लिखि रॉखौ। अगर तुम पुर पवित्र-शास्त्र कैं पढ़न चांछा तो हिंदी भाषा मिं पढ़ि सकछा।

यैक क्वे लै शिर्शकक ताव बे कोष्ठक मिं जो किताबक नाम और गिनती छु, उकैं तुम इसिक समझया जस (उत्पत्ति ३:१-७), यैक मतलब छु - उत्पत्तिक किताब वीक तिसर अध्यायक एक बे सात पद तलक। यौ हिस्स कैं तुम इसिक खोलिबेर हिंदी पवित्र-शास्त्र मिं लै पढ़ि सकछा।

तुम यौ किताब कैं किलै पढ़न चांछा?

यौ किताब पढ़िबेर हम परमेश्वरक बारि मिं समझि सकनू कि उं कतुक महान, सामर्थ्यवान और पवित्र छन। उं पापियों कैं सजा दिंनी, लेकिन जो

उनुमिं भरौस करुं उकैं माफ लै करनी। और सबों हबेर खाश बात यौ छु कि उनुल आपण पुत्र प्रभु यीशु मसीह कैं यौ दुनी मिं यैक लिजी भेजौ कि उं हमर मुक्तिदाता हो।

यौ किताब हमुकैं बतूं कि जब हम प्रभु यीशु मिं विश्वास करनू, तब हमुकैं आपण पापोंक सजाक लिजी डरणकि के जरवत न्हैं। मुक्ति मिलणक लिजी हमुकैं के कठोर नीम नि मानण चैं, न के मुश्किल काम करण चैं। बस यीशु मिं भरौस धरिबेर उनेरि बात मानण छु। जब हम आपण पापों बे पछताव करिबेर माननू कि यीशुक जरियल हमार पाप माफ है गेईं, तब हम परमेश्वरक नॉनतिन बणनूं और हमुकैं मौतक डरि लै नि रुन। परमेश्वरक यौ भलि खबर सबोंक लिजी छु।

कुमाउंनी पढ़णक बारि मिं

कुमाउंनी भाषा मिं एक स्वर छु जैक उच्चारण 'आ' हबेर फरक हुं। क्वे लेखक यैक जॉग मिं हलंतक प्रयोग करनी, लेकिन हम यौ शब्द इसिक लिखनू, जसिक 'बॉट', 'जॉम', 'करॉल'। जैल कुमाउंनी भाषा कभै नि पढ़ि राखि, वीक लिजी शुरु मिं पढ़ण थ्वाड़ मुश्किल है सकुं। लेकिन हमर भरौस छु कि पढ़नै-पढ़नै तुमेरि आदत बणि जालि।

यैक लिजी कि कुमाउंनी बोलियों मिं थ्वाड़ अलग-अलग फरक छु, है सकुं कि यौ पुस्तकक भाषा तुमेरि बोलि है थ्वाड़ फरक हो। लेकिन "कुमाउंनी साहित्यिक संस्था" यौ ऑश करुं कि फिर लै तुम यौ किताब पढ़िबेर खुशि ह्वला।

अल्मोड़ा, २०११